महान शहीद 143

भाई साहिब भाई मनी सिंघ जी

प्रकाशक

सिख मिशनरी कालेज (...)

1051, कूचा 14, फीलड़ गंज, लुधियाना

सब आफिस ए/143 फतेह नगर, नई देहली-

Page 1 www.sikhbookclub.com

१ੴ वाहिगुरू जी की फतहि ।।

महान शहीद
भाई साहिब भाई मनी सिंघ

प्रकाशक

सिख मिशनरी कालेज (रजिः)

1051, कूचा-14, फीलड गंज, लुधिआणा-8

सब आफिस :- A-143, फतहि नगर दिल्ली-18

सभी अधिकार प्रकाशक द्वारा सुरक्षित हैं

www.sikhbookclub.com

शहीद भाई मनी सिंघ जी

भाई मनी सिंघ जी के बहु पक्षीय व्यक्तित्व का, पंजाब के इतिहास में एक भिन्न तथा निराला स्थान है। एक ऐसे समय पर जब कि पंजाब पर जाबर तथा पतित हकूमत लोगों के इखलाकी व्यक्तित्व को मलियामेट करने पर तुली हुई थी, जब इस तरह के सरकारी हुकम जारी हो चुके थे कि कोई भी व्यक्ति 'गुड़' शब्द का प्रयोग नहीं कर सकता क्योंकि यह 'गुरू' शब्द के बहुत समीप है। गुड़ का नाम लेने से(सिखों का) गुरू याद आता है। जब सिंघों के सिरों के इनाम रखे गये थे, उस समय भाई मनी सिंघ मानव के स्वाभिमान तथा विचारों की स्वतंत्रता की रक्षा की खातिर और बहशी बर्बरता के सामने आत्मिक बल की उच्चता दर्शाने की खातिर मैदान में निकले और उन्होंने बंद बंद, बोटी-बोटी कटवा कर पाप के हवन कुंड की अग्नि में जीवन की आहुति दे दी। इस प्रकार विचारों की स्वतंत्रता और धर्म की रक्षा के इतिहास में, भाई मनी सिंघ का दर्जा दुनिया के महान् योद्धाओं में माना जाना चाहिए। भाई मनी सिंघ की महानता केवल जीवन निर्माण के एक प्रेरक के रूप में ही नहीं बल्कि एक अच्छे ढंग से मरने की कला के कारण भी बहुत है। वह एक कर्मयोगी थे। अपने समय का निर्भय योद्धा, राजनीतिक तथा धार्मिक अग्रणी होने के अतिरिक्त सिख धर्म तथा साहित्य का महान् विद्वान तथा पूर्ण ज्ञाता भी थे।

भाई साहिब की जन्म तिथि तथा जन्म स्थान के बारे में भिन्न-भिन्न लेखकों ने अलग-अलग लिखा है। प्रोफेसर सुरिन्द्र सिंघ कोहली ने "भाई मनी सिंघ" नामक पुस्तक, जो मार्च 1961 में भाषा विभाग पंजाब, पटियाला द्वारा प्रकाशित हुई, में लिखा है :

"भाई मनी सिंघ ने गुरसिख घराने में जन्म लिया। उसके जन्म की तारीख के बारे में पता नहीं लग सका। इतना जरूर पता लगता है कि वह कंबोवाल के दुलट्ट के चौधरी का पुत्र था....."।

ज्ञानी ज्ञान सिंघ ने तो चौधरी काले को दुलट्ट जाट बताया है पर कई खोजी उनको कंबो वंश में हुआ मानते हैं।......... भाई कान्ह सिंघ नाभा के कथनानुसार "एक सज्जन ने भाई मनी सिंघ का जन्म कान्हे कांछे का होना लिखा है।"

ज्ञानी ठाकुर सिंघ अपनी पुस्तक "सिरी गुरद्वारे दर्शन" के (पृष्ठ 543-72) कथनानुसार भाई साहिब का जन्म 24 माघ मंगलवार को माता दया कौर जी की गोद में भाई कालू के घर घग्गर नदी के किनारे, नगर काकड़ू जिला अंबाला में हुआ था। बाद में माता-पिता आपको सुनाम ले आये थे। प्रसिद्ध खोजी ज्ञानी गर्जा सिंघ जी ने "शहीद बिलास" नामक पुस्तक का संपादन किया है जिसमें भट वहियों के आधार पर भाई मनी सिंघ जी की जीवन यात्रा का निरूपण किया गया है। ज्ञानी गर्जा सिंघ "शहीद बिलास" की पोथी संबंधी भूमिका में इस तरह वर्णन करते हैं :

यह शहीद बिलास पोथी मुझे भट्ट मोहलू राम के घर से भाई मनी सिंघ भट्ट नगर करसिंघ (जीद) की सज्जनता से प्राप्त हुई। इसका कर्ता सेवा सिंघ, भाई केसर सिंघ कोशिश का पुत्र था, जो बावा भिखा, जिसकी बाणी गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज है, के पुत्र भाई कीरत शहीद की औलाद में से छटी पीढ़ी थी।

कीरत की शहीदी भाई मनी सिंघ के दादा बल्लू पंवार सहित अमृतसर, मुखलस खान फौजदार गोरखपुरी से लड़ते हुए 17 बैसाख संवत् 1691 बिक्रमी (15 अप्रैल, 1634 ई०) को हुई थी।*

भाई सेवा सिंघ को इस शहीद बिलास की बहुत सी ऐतिहासिक सामग्री अपने पिता पितामा की बहियों में से तथा पिता पितामा से सुनी सीने बसीने चली आ रही रवायतों के आधार पर प्राप्त हुई थी। इसके बड़े-बूढ़ों ने 9 असू संवत् 1768 (11 अक्तुबर, 1711 ई०) को आलोवाल (लाहौर) के मुकाम पर शाही हुकम से नाज़म असलम खान लाहौर के समय कत्ल किया गया था।

सेवा सिंघ ने शहीद बिलास के समाप्त होने की तारीख पर संवत् कोई नहीं दिये, केवल इतना ही कहा है :

सिंघ संग्राम बीर इक भयो। पोता मनी सिंघ का आयो।।
तिस के पांच सुत अगारी। जिन में संगत सिंघ बलकारी।।
सकल परवार मेल इन सारा। गेल इन्हीं के पिता हमारा।।
देस मालवे पहुंचे आई।। गैल जीत सिंघ लई बनाई।।
कुछ चिर रहे लाडवे बीच।। ऐक ग्राम राजे तिहं दीच।।२०६।।
शहीद बिलास पौथी शुरू करी लाडवे माहि।।
पायो भोग आ भादसों गुरू कृपा ते आय।।२०७।।

इस प्रकार सेवा सिंघ के अभिलेखों के अनुसार यह स्पष्ट हो जाता है कि यह समय महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य का था। इसने राजा अजीत सिंघ लाडवा पति के अहम में यह शहीद बिलास "भटखरी" में लिखा "भटखरी" भट्टों की अपनी लिपी मानी जाती है। लंडां अथवा टाकरों की तरह इसमें भी मात्राएं आदि नहीं हैं। इस शहीद बिलास का उतारा पंजाबी (गुरमुखी) अक्षरों में छज्जू सिंघ भट्ट ने जो सेवा सिंघ से तीसरी पीढ़ी थे, ने किया था।

इस लघु पुस्तिका में जो समाग्री दी जा रही है उसका आधार सेवा सिंघ कृत शहीद बिलास ही है क्योंकि इसके बीच में आई घटनाएं, व्यक्तियों और स्थानों के अन्य वर्णन को दूसरे इतिहासकारों, विशेषकर कोयर सिंघ, सुखा सिंघ, वीर सिंघ बल, रतन सिंघ भंगू (प्राचीन पंथ प्रकाश), भाई संतोख सिंघ, ज्ञानी ज्ञान सिंघ आदि से स्पष्ट किया गया है। पंथक विद्वानों का यह कर्तव्य है कि वे भाई साहिब के जन्म स्थान तथा जन्म तिथि संबंधी पड़े हुए भुलेखों का खोज के आधार पर समाधान करें।

---

* बल्लू मूले का, पोता राऊ का, पड़पोता चाहड़ का, चंद्र बंसी, भारद्वाजी गोत्रा पंवार.....दिनांक बैसाख परविशटे 17 संवत्, 1691 को गुरू चक के मलहान (भाव स्थान से है) गुरू के हुकम गैल सामने माथे मुर्तजा खन को मार कर जूझा। गैलों कीरत बेटा भिखा का, पोता रईया का, पड़पोता नरसी का, वंसी भगीरथ का, कोशिश गोत्रा, गौढ़ ब्राह्मण रण में जुझ कर मरा.....।

(भट्ट वही तलउडा, परगना जींद)

'शहीद बिलास' के लेखक के अनुसार भाई मनी सिंघ जी का जन्म★ भाई माई दास जी के घर चैत्र सुदी दुआदसी, ऐतवार, संवत् 1701 (10 मार्च, 1644) को **माता मधरी बाई** की गोद में, गांव **अलीपुर**(उत्तरी) जिला मुजफरगढ़ (पं० पाकिस्तान) में हुआ। आपके दादा भाई बल्लू राउ बहुत बलवान बहादुर थे जो छठे पातशाह श्री गुरू हरिगोबिंद साहिब के समय तुर्कों के संग युद्ध करते हुए 15 अप्रैल, 1634 को अमृतसर में शहीद हो गये। भाई बल्लू जी के हाथ में 12 सेर भारी बर्छा हुआ करता था जिसके सामने तुर्क अड़ न सकते।

भाई माई दास जी के 12 पुत्र थे। इनमें से केवल एक भाई अमर चंद को छोड़ कर बाकी सारे 11 शहीद हुए। इन 12 पुत्रों का विवरण इस प्रकार है :

(1) **भाई जेठा सिंघ**-जो अलोवाल में 11 अक्तूबर सन् 1711 को शहीद हुए।

(2) **भाई दयाल दास** (दयाला जी)-जो गुरू तेग बहादुर साहिब जी से पहले 11 नवम्बर 1675 को दिल्ली में शहीद किये गये।

(3) **भाई मनी सिंघ जी**-जो 24 जून, सन् 1734 को लाहौर में शहीद हुए।

(4) **भाई दान सिंघ जी**-जो 7 दिसम्बर सन् 1704 को चमकौर साहिब में शहीद हुए।

(5) **भाई मान सिंघ जी**-जो 3 अप्रैल 1708 को चित्तौढ़ गढ़ में शहीद हुए।

(6) **भाई अमर चंद जी**-यह छोटी आयु में ही शरीर त्याग गये थे।

(7) **भाई रूप सिंघ जी**-जो 11 अक्तूबर सन् 1711 को अपने बड़े भाई जेठा सिंघ जी के संग लाहौर के परगणा आलोवाल में शहीद हुए।

इन सात पुत्रों का जन्म **माता मधरी बाई** की गोद में हुआ।

नीचे लिखे पांच पुत्र **माता लडिकी** की गोद में जन्मे।

(1) **भाई जगत सिंघ**-जो 24 जून 1734 ई० को लाहौर में भाई मनी सिंघ जी के साथ ही शहीद किये गये।

(2) **भाई सोहण चंद**-जो 20 मार्च 1691 ई० को नदौण के युद्ध में शहीद हुए।

---

* भाई मनी सिंघ जी के बारे में पहला हवाला संवत् 1701 बिक्रमी (1644 ई०) को गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज बाणी वाले भट्ट "कीरत" के पुत्र बोहथ ने इस तरह दिया है, "बंधाई ली मनी राम की, बेटा माईदास का, पोता बलू का, पड़पोता मूले का.....संवत् 1701 बरखे माह चेतर सुदी दुआदशी रविवार, शुभ वार, शुभ घड़ी जन्म हुआ (कुल परोहित बोहथ भट्ट को माना, गुरू की कड़ाही की।)

मुल्तानी सिंधी वही

(4) **भाई राय सिंघ**-जो 30 दिसम्बर 1705 ई० को मुक्तसर की लड़ाई में शहीद हुए

(5) **भाई हठी चंद**- जो 18 सितम्बर, 1688 ई० को भंगाणी के युद्ध में शहीद हुए।

अत: पाठक जन पढ़ कर गौरव महसूस करेंगे कि "भाई मनी सिंघ शहीद" सिख पंथ के कितने महान् व्यक्ति हैं जिनका दादा शहीद, 11 भाई शहीद और जिनके पुत्रों में से 7 पुत्र शहीद हुए (जिनका विवरण आगे आयेगा) जब भाई मनी सिंघ जी की आयु 13 वर्ष की हुई तो उनके पिता भाई माई दास उनको साथ लेकर **श्री गुरू हरिराय साहिब** के दर्शन करने हेतु **श्री कीरतपुर साहिब** आये। होनहार "मनीये" ने जब सतगुरू के चरणों में शीश झुकाया तो सतगुरू साहिबान ने सुंदर स्वरूप तथा होनहार मनीये को देख कर कहा कि यह बालक गुणों से भरपूर सारे संसार में प्रसिद्धी प्राप्त करेगा।

भाई मनी सिंघ जी ने लगभग 2 वर्ष तक गुरू हरिराय जी के चरणों में पिता सहित सेवा की। लंगर जूठे बर्तन साफ करते और मुंह से हर समय गुरबाणी का जाप करते रहना "मनिये" की नित्यक्रिया थी जिस से बालक का आंतरिक हृदय शुद्ध और बलवान होता गया।

अब भाई मनी सिहं जी की आयु 15 वर्ष की हो चुकी थी। इन के पिता भाई माई दास जी ने गुरू हरिराय साहिब के पास विनती की कि यदि आज्ञा हो तो मनी सिहं का विवाह करने के लिए कुछ समय के लिए छुट्टी प्रदान की जाए। आज्ञा पा कर भाई मनी सिंघ जी पिता सहित अपने घर वापिस अलीपुर आ गये।

विवाह : 15 वर्ष की आयु में भाई मनी सिहं जी की शादी भाई लखी राय* वासी गांव खैरपुर की सुपुत्री बीबी सीतो जी के संग हुई। विवाह के पश्चात कुछ समय अपने परिवार के साथ व्यतीत करके, भाई मनी सिहं जी अपने बड़े भाई, भाई जेठा जी और

अपने बड़े भाई भाई जेठा जी तथा भाई दयाला जी सहित फिर श्री गुरू हरिराय साहिब के चरणों में कीरतपुर आ हाजिर हुए। भाई मनी सिहं के मन में सदा यही चाव बना रहता है कि मेरा सारा जीवन गुरू सेवा करते हुए व्यतीत हो।

जब गुरू हरिराय साहिब परलोक गमन कर गये तो भाई मनी सिहं जी गुरू हरिकिशन साहिब की सेवा में तत्पर रहे। जब गुरू हरिक्रिशन साहिब दिल्ली जाने के लिए रवाना हुए तों भाई मनी सिहं जी के

---

* यह वही लखी राय है जिन्होंने नवन पातशाह की शहीदी के समय धड़ का संस्कार अपने घर में ले जा कर किया था। लखी राय उस समय भारत में एक बड़ा व्यापारी था। उसका देहांत 28 मई सन 1680को रसीन गांव (जिस सड़क का आजकल नाम रायसीना रोड़ है) रकाबगंज में हुआ था। इसका हवाला भटवही से मिलता है। केशो भट्ट ने इस प्रकार लिखा है :

चला चलाई हो रही गडड गडड उखरे मेख।।
लाखी नगाहीआ ले चले तूं खरा तमाशा देख।।

साथ जाने वाले गुरसिखों में से एक थे। गुरू हरिक्रिशन साहिब 30 मार्च 1664 ई० को दिल्ली में ज्योति में विलीन हो गये तो भाई मनी सिहं जी सतगुरू सहिबान की माता श्री सुलक्षणी जी को साथ लेकर नवम् सतगुरू श्री गुरू तेगबहादुर साहिब की सेवा में बकाला गांव में आ हाजिर हुए। आपके बड़े भाई, भाई जेठा जी तथा भाई दयाला जी* भी गुरू तेग बहादुर साहिब के पास आपके साथ ही आये थे। भाई मनी सिहं की उम्र इस समय 20 वर्ष की थी।

जब कुछ समय गुरू तेग बहादुर साहिब की शरण में सेवा करते हुए व्यतीत हो गया तो आज्ञा पा कर आप अपने गांव अलीपुर वापिस आ गये। कुछ समय घर में व्यतीत किया और फिर बैसाखी के अवसर पर परिवार सहित चक नानकी (आनंदपुर साहिब) आ गये। गुरू तेग बहादुर साहिब तभी पूर्व के क्षेत्रों में धर्म प्रचार करके वापिस आनंदपुर साहिब आये थे। यह वर्णन 1672 ई० का है।

गुरू तेग बहादुर साहिब की हजूरी में रह कर भाई मनी सिहं जी ने गुरबाणी की पोथियों की प्रतियां बनवाने की महान सेवा संभाली जैसा कि शहीद बिलास के कर्ता भट्ट सेवा सिहं ने लिखा है :

तेग बहादुर गुरू ढिग, चक नानंकी माहि।।

बाणी पढ़ै बाणी सुणै, बाणी लिखे लिखाहि।।३८।।

जब कशमीर के मुखी पंड़ितों की फर्याद सुन कर गुरू तेग बहादुर साहिब शहीदी प्राप्त करने के लिए दिल्ली में चल पड़े तो भाई जेठा जी और भाई मनी सिह आदि गुरसिख, गुरू गोबिंद सिहं जी के पास ठहरे, और दीवान भाई मती दास, भाई सती दास तथा भाई दयाला जी गुरू जी के साथ गिरफ़तार किये गये। बाबा गुरदित्ता, भाई जेता दिलवाली, तथा भाई ऊदा राठौर गुरू आज्ञा के अनुसार दिल्ली मोहला दिलवाली के सिख भाई नानू सिंघ (नामा बंसी) के घर पहुंचे और यही पर ही भाई आज्ञा राम, लखी शाह तथा नगाहिया आदि गुरसिख इन को मिले थे, जिन्होंने गुरू तेग बहादुर साहिब के पावन धड़ तथा पावन शीश की सेवा संभाल करने की योजना बनायी थी।

दसम पातशाह के हजूर रहने वाले भाई मनी सिहं जी की आयु जब 35 वर्ष की हुई तो आप पढ़ने, पढ़ाने तथा लिखने लिखाने वाले विद्वान बन गये। "शहीद बिलास" के कर्ता के अनुसार :

सेवा सी करंत ते रहंत गुरां पास सदा,

लिख लिख बाणी करे पोथीआं तिआर इह।

---

* यह भाई दयाला जी, भाई मनी सिहं जी के सगे भाई थे जो गुरू तेग बहादुर साहिब की शहीदी से पूर्व भाई मती दास जी के पश्चात् उबलती हुई देग में उबाल कर शहीद कर दिये गये। "दयाल दास माई दास का, पोता बलू का, पड़पोता मूले का- - - - - गुरू गैलों मगहर सुदी पंचमी संवत 1732 को दिल्ली चांदनी चौक के मलहान, शाही हुकम गैल मारा गया। गैलो मती दास सती दास बेटे हीरा नंद के पोते लखी दास के पड़पोते पराग के बंस गौतम का, सारसुती भार्गव गोतरे छिब्बर ब्राहमण मारे गये।"

(भट वही मुलतानी-सिंधी)

पढ़दा पढ़ांदा ते जतांदा नहीं आप ताईं,

मन नीवां मत उची इहों दिल धार इह।

हठी तपी पूरा, सिखी सिदक दा पुतला सी,

साखियां सिदक दीआं करदा उचार इह।

सेवा हरी इवें किवें बीत गये बरख कई,

जुध दे करने विच बड़ा हुशियार इह।।४१।।

भाव, भाई मनी सिहं जी जहां बाणी के उतारे करते करवाते थे वहीं जंगों युद्धों में भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे।

17 बैसाख संवत 1742 विक्रमी (1685 ई०) को राजा मेदनी प्रकाश के निमंत्रण पर गुरू जी नाहन पधारे। भाई मनी सिहं भी सतिगुरू साहिबान के साथ थे।

4 सितम्बर सन् 1687 को बाबा राम राय की मृत्यु खुरवधी (नवाना देहरादून) में हुई तो उन की धर्म पत्नी पंजाब कौर की ओर से निमंत्रण आने पर सतगुरू जी भाई मनी सिहं को साथ लेकर देहरादून गये थे और मसंदों की धुनाई की थी।

अगले साल 24 अगस्त सन् 1688 को बाबा राम राय जी की बरसी थी। सतगुरू जी स्वयं तो नहीं गये और भाई मनी सिहं, दीवान नंद चंद (संघा) और दया राम आदि चुने हुए 50 सिख भेजे। मसंदों में से एक मसंद जिसका नाम "गुरबख्श" था, उसने दशमेश गुरू की निंदा की और तख्तपोश पर बैठे भाई मनी सिंघ को जमीन पर पटका दिया। बस फिर क्या था, सिंघों ने म्यान में से तलवारें सूत लीं। मसंद "गुरबख्श" को मैदान में से भागते देर न लगी। सिघं उसको मार देना चाहते थे, पर पंजाब कौर ने वास्ता डाल कर सिंघों का जोश ठंड़ा किया। वापिस पाऊंटे पहुंच कर सिंघों ने सारा वृतांत दशमेश जी को सुनाया। गुरू साहिब ने उपदेश दिया "कि रामराइयों का कभी विश्वास नहीं करना।"

जब सन् 1688 में भंगाणी का युद्ध हुआ तो भाई मनी सिंघ जी ने बाकी गुरसिखों के साथ मिल कर शूरवीरता के जौहर दिखलाये। इसी युद्ध में आप के भाई हठी चंद जी शहीदी पा गये।

एक मास तक पाऊंटा साहिब में रहने के पश्चात् भाई मनी सिहं जी दशमेश जी के साथ आनंदपुर साहिब वापिस आ गये। आनंदपुर साहिब में रहते समय भाई मनी सिहं जी की नित्य की क्रिया इस प्रकार थी:

सवा पहर रात रहते जागना, स्नान-पानी के पश्चात् सावधान हो कर बाणी का जाप करना, फिर गुरू की चरण शरण में आकर माथा टेकना। सारा दिन सेवा करना और हर समय गुरू के सम्मुख रह कर गुरू आदेशों का पालन करना।

जब 1690 ई० को नादौन के युद्ध में भीम चंद ने गुरू साहिब को मदद के लिए पुकारा तो उसकी सहायता के लिए भाई मनी सिहं तथा अन्य वीर बहादुर गुरसिखों को साथ लेकर गुरू साहिब आ पहुंचे।

 www.sikhbookclub.com

पातशाह ने आपको "दीवान" की उपाधि से सम्मानित किया।

भाई साहिब अनंदपुर में रह कर दिन रात गुरू की सेवा में तत्पर रहते थे। आप की गुरू प्रीति इस तरह थी जैसे चांद और चकोर की होती है। जब संवत् 1756 बिक्रमी को (30 मार्च सन् 1699) को वैसाखी वाले दिन गुरू जी ने खालसा की सृजना की तो भाई मनी सिहं जी ने खंडे बाटे की पाहुल छकी और मनीऐ से भाई मनी सिहं बन गये। शहीद बिलास के कर्ता के अनुसार :

पहुल दीयो कह थी दसमेश जू, मनीऐ थी सिघं मनी बनायो।।
पांच पीआय चुली मनी सिघं कू, पांच वारी गुर फते बुलायो।।
पांच चुली मध आंखन डार के, पांच चुली विच केसन पायो।।
सेवा हरी नीलबर श्री गुर, तन मनी सिघं जू के सजायो।।४२

इसी दिन भाई मनी सिंघ जी ने पांच सुपुत्र* बचित्र सिंघ, उदै सिंघ, अनिक सिंघ, अजब सिंघ और अजायब सिंघ सतगुरू की भेंट किए। पांचों सुपुत्रों को भी खंडे के अमृत की निधि प्रदान की गयी। भाई साहिब के भाइयों-राय सिंघ, रूप सिंघ, मान सिंघ आदि ने भी खंडे का अमृतपान किया।

भाई साहिब के दस पुत्रों में से 7 पुत्रों ने शहीदी प्राप्त की। सात पुत्र माता सीता की गोद में थे और बाकी के गुरिये चुहाण हजावत की पुत्री श्रीमती खेमी की गोद में से थे।

अपनी शस्त्र कुशलता के कारण भाई मनी सिंघ समकालियों में एक प्रमुख योद्धा माने जाते थे। उनको गुरू साहिब का दीवान होने की हैसियत में अनेक आर्थिक, राजनैतिक तथा प्रबंधक मसलों की ओर ध्यान देना पड़ता था। फिर भी भाई साहिब इतना समय निकाल लेते थे कि वह गुरू ग्रंथ साहिब के अर्थों के ज्ञानी बन जायें। भाई सेवा सिंघ के कथनानुसार भाई साहिब हर रोज आनंदपुर में सिख संगत को श्री गुरू ग्रंथ साहिब की कथा सुनाते थे।

कथा रोज गुरू ग्रंथ की संगत तांई सुनाइ।।
आनंदपुरे कछु समा इम बीत गयो थी आइ।।79।। (शहीद बिलास)

---

* भट्ट वहियों के अनुसार भाई साहिब मनी सिंघ जी के दस सुपुत्र थे :
1. चित्र सिंघ- जो 24 जून, 1734 को लाहौर में शहीद हुए।
2. बचित्र सिंघ-जो दिसम्बर 1704 ई० को कोटला निहंग (आनंदपुर के सपीप) में शहीद हुए।
3. उदै सिंघ-जो दिसम्बर 1704 ई० को शाही टिबी आनंदपुर के समीप शहीद हुए।
4. अनिक सिंघ-जो दिसम्बर 1704 ई० को चमकौर में शहीद हुए।
5. अजब सिंघ-जो दिसम्बर 1704 ई० को चमकौर में शहीद हुए।
6. अजायब सिंघ-जो दिसम्बर1704 ई० को चमकौर में शहीद हुए।
7. गुरबख्श सिंघ-जो 24 जून 1734 ई० को लाहौर में शहीद हुए।
8. भगवान सिंघ, 9. बलराम सिंघ, 10. देसा सिंघ।

रहित नामीया

ने सिख धर्म का एक जरूरी अंग समझते हुए इसको अधिक अपनाया।

प्रतीत्त होता है कि यह तरीका इतना सफल हुआ कि भाई मनी सिंघ के नाम पर गुरू ग्रंथ साहिब की कथा की एक संप्रदाय प्रचलित हो गयी जिसको ज्ञानी संप्रदाय कहा जाता है। सिखों की अनेक प्रणालियां भाई मनी सिंघ जी द्वारा गुरू गोबिंद सिंघ जी तक पहुंच जाती हैं।

भाई साहिब को इसी विद्वता तथा ज्ञान के फलस्वरूप ही गुरू साहिब ने भाई सेवा सिंघ के कथनानुसार, भाई भूपत सिंघ* आदि पांच सिखों सहित पहले पंथ में अमृत की देन की रसम अदा हो जाने के पश्चात् अमृतधारी सिखों की विनती को स्वीकार करते हुए श्री हरिमंदर साहिब पर श्री अकाल बुंगे का सेवादार नियुक्त करके भेजा। रतन सिंघ भंगू इस कथन की इन अक्षरों में पुष्टि करते हैं :

प्रथम भुजंगी वल माझे घलाऐ।। दे दे पहुल गुरू चक बहाऐ।.....३६

(प्राचीन पंथ प्रकाश, संस्करण तृतीय पृ० ४७)

"**हुकम रजाई चलणा**" के महावाक के अनुसार भाई मनी सिंघ जी ने श्री अमृतसर पहुंच कर श्री दरबार साहिब की सेवा को संभाल लिया। गुरू मर्यादा के अनुसार यह श्री हरिमंदर साहिब के तीसरे ग्रंथी थे- पहिले यह सेवा बाबा बुढा जी को प्राप्त हुई, जो माघ सुदी चौथ संवत 1688 बिक्रमी (16 नवम्बर, 1631) को गुरपुरी सिधार गये। इनके पश्चात् यह सेवा भाई गुरदास जी को मिली, जो अमृतसर के पहले युद्ध के पश्चात् 25भाद्रव सुदी पंचमी संवत् 1693 बिक्रमी (25 अगस्त, 1636 ई०)को प्रलोक गमन कर गये थे। इनके पश्चात् फिर भाई मनी सिंघ का वर्णन आता है।

गुरू हरि गोबिंद साहिब जी ने, युद्धों (जंगों) से निवृत होकर कहलूर की रियासत में नये नगर कीरतपुर को जा बसाया था यहीं पर ही चैत्र सुदी पंचम संवत 1701 बिक्रमी (1644) को ज्योति में विलीन हो गये थे। उस समय श्री दरबार साहिब का सेवादार कौन था कुछ कहा नहीं जा सकता।

सोढी मिहरबान माघ सुदी पंचमी संवत 1696 बिक्रमी (18 जनवरी, 1639) को अपने पुत्र हरि जी को गद्दी देकर प्रलोक गमन कर गये और इनका लगभग सारा समय अमृतसर में ही व्यतीत हुआ। हरि जी की मृत्यु 20 बैसाख वदी 11 संवत 1753 बिक्रमी (17 अप्रैल, 1696) को हुई।

इसके पश्चात् सोढियों की संगत तीन हिस्सों में बंट गयी और इनको बांटने वाले सोढी हरि गोपाल, कंवल नैन (कौल जी) तथा निरंजन राय थे, जो अमृतसर में केवल तीन साल ही टिक सके।

इस तरह भाई गुरदास जी के पश्चात् ग्रंथी भाई मनी सिंघ जी को समझना चाहिए। सिख सतिगुरू साहिबान में से गुरू हरि गोबिंद साहिब जी के पश्चात् नौवें पातशाह गुरू तेग बहादुर जी माघ सुदी

---

* भाई मनी सिंघ के साथ भूपत सिंघ, गुलजार सिंघ, कोयर सिंघ चंदरा, दान सिंघ तथा कीरत सिंघ गये थे। तहिकीकात चिश्ती के लेखक मौलवी नूर अहमद (पृ० 695) गुलजार सिंघ इनके साथ आना बताते हैं।

पूर्णमासी संवत 1721 बिक्रमी (22 नवम्बर 1664 ई०) को परिवार सहित श्री अमृतसर के दर्शनों को आये थे। आगे से सोढी हरि जी के करिंदों ने श्री दरबार साहिब के दरवाजे बंद कर लिये।

भाई मनी सिंघ जी, भाई सेवा सिंघ के कथनानुसार शीश भेंट कोतुक के पश्चात् उसी वर्ष श्री अमृतसर पहुंचे थे और इन्होंने जयेष्ठ सुदी चौथ को श्री गुरू ग्रंथ साहिब का प्रकाश किया और सोढियों की चलाई पिछली मर्यादा को बंद कर के गुरू मर्यादा का प्रवाह चलाया था। जैसा कि शहीद बिलास के कर्ता ने लिखा है :

लै के संगत कूं नाल, मनी सिंघ तत्काल,
पहुंचा सुधा सर ताल, आय दर्शन पांवदा।
जेठ सुदी चौथ खास, कीआ ग्रंथ प्रकास,
पहले कर अरदास, झंडा साहिब कूं झुलांवदा।
सिंघ सुण सुण आउण, आ के दरसण पाउण,
फते गुरू की बुलाउण, गैल सब कूं बहावंदा।
दिती बदल सी रीत, मीणे भऐ भै भीत,
भई खालसे की जीत, भट देग वरतांवदा।।८६।।

भाई मनी सिंघ के दरबार साहिब का प्रबंध संभाल लेने से संगत दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती गई। मीणों का बल कम हो गया। नित्य प्रति गुरू ग्रंथ साहिब की बाणी की कथा होने लगी। अकाल बुंगे में दीवान सजने लगा। भाई साहिब, दशमेश जी के द्वारा प्रदृत्त अमृत की रहित मर्यादा संगत को दृढ़ करवाते, जिसके फलस्वरूप गांवों में से नये-नये लोग आ कर सिंघ सजने लग जाते और वापिस गांवों में जा कर दूसरों को सिंघ सजने की प्रेरणा देते।

भाई सेवा सिंघ के कथनानुसार, भाई मनी सिंघ, सिख संगत को साथ लेकर कई बार दर्शनों के लिए श्री आनंदपुर साहिब आते और हरिमंदिर साहिब तथा वहां के सिखी हालात से गुरू साहिब को अवगत करवाते। असु की पहली संवत 1757 (1 सितम्बर, 1700 ई०) को हाथी के साथ लड़ने-वाली जंग में, जहां आप के दोनों पुत्रों, भाई बचित्र सिंघ तथा उदै सिंघ को गुरू साहिब ने थपथपी देकर मैदाने जंग में मुकाबले के लिए भेजा था, वहीं आप को भी बुला कर भेजा। जैसा कि लिखा है :

लोहे गढे बर बीर मनी सिंघ मद्रज दे भट तीर बुलायो।
ढाल कृपाण बंदूक कमान, दऐ सभ आयुद्ध मान बढ़ायो।।५६।।

(वीर सिंघ बल कृत सिंघ सागर, अध्याय 11)

अमृत की पहली रसम अदा होने के पश्चात् कवी सेनापति के कथनानुसार यह आनंदपुर की पहली जंग थी जिसमें ये तीनों पिता पुत्र शामिल हुए थे। राजा अजमेर चंद तथा उसके साथियों की सौगंधों पर कि अब हम घर जाने योग्य हो जाये। एक बार किला आनंद गढ़ को खाली कर दो, फिर चाहे कभी

भी आ जाना। सतगुरू साहिबान ने उनकी अधीनगी को देख कर, भाई मनी सिंघ आदि योद्धाओं सहित कीरतपुर निकल कर निर्मोह गढ़ के टीले पर आ कर डेरा लगा दिया।

राजा अजमेर चंद ने, जो अवसर की ताक में था, सौगंधों को ताक पर रख कर वजीर खां नाजिम सरहिंद को मिल कर रूस्तम खां को चढ़ा लाया जैसा कि वर्णन आता है :

साहिब बचन अलाया अनंद मनै मुस्काय कै।
चैंचल सिंघ जुझार सिंघ नूं पास बहाय के।
तुरका दीयां फौजां आइयां सिंघां उपर गुसा खाय के।
भाई सेवा सिंघ सदिया अरदास धरी लिखवाय के।
की करना है उस समें जां बिज पवै झरनाय के।
बोलिया चित्र बचित्र सिंघ रन होली खेलें जाय के।
पहला खंडा झांड़ना रूस्तम दे सिर कड़काय के।।

(वार पुरातन पृ० 10)

आनंद की बात यह है कि भाई साहिब के तकरीबन सारे ही पुत्र इस धर्म युद्ध में अगली पंक्ति में होकर लड़े। इसकी प्रौढ़ता भाई संतोख सिंघ जी भी करते हैं :

पिख अजीत सिंघ गमने आगे उदे सिंघ रिस धारी।।
आलिम सिंघ दया सिंघ पहुंचय सिंघ अगारी।।१।।
बखसस सिंघ बखसीस सिंघ जुग, ईसर सिंध सु क्रोधा।।
शेर सिंघ देवा सिंघ उमडयो, बर बचित्र सिंघ जोधा।।२।।
नाहर सिंघ गजा सिंघ गरजा सिंघ अजब सिंघ तत्काला।।
गयो अजायब सिंघ तहा को संत सिंघ रिप काला।।३।।
अनिक सिंघ भगवान सिंघ तह महा सिंघ हय प्रेरा।।
धर्म सिंघ साहिब सिंघ धाये, राम सिंघ रस हेरा।।४।।

(गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, रूत 4, अंसु 45)

यहां पर मालूम होता है कि भाई मनी सिंघ तथा उस के पुत्रों की कार गुजारी से गुरू सहिब को अपार तसल्ली तथा खुशी थी और इस की सनद के रूप में गुरू जी ने संवत 1760 बिक्रमी(1703)ई० में एक विशेष हुकमनामा प्रदान कर के उनको सम्मानित किया था। यह हुकमनामा, जिस का वर्णन शहीद बिलास में सेवा सिंघ ने किया है, की नकल इस प्रकार दर्ज है :

੧ੴ सतिगुर प्रसादि।।
सिरी सतिगुरू जी की आज्ञा है। भाई बचित्र सिंघ जी।।

भाई अजायब सिंघ जी।। इह इक माई दासु वोइ मनी सिंघ नूं
वाहगुरू सरम रखेगा। तुसी मेरे पुत्र फर्जदह खान जाण हो।। तुसा उपर
मेरी खुशी है। सभ वरतारे के तुसी महरम हो।। होर कौडी दमड़ी
पैसा धेला रुपऐ रछिआ दा।। जो असानू देहिगा।। इह मेरें पुत्र
फर्जद हैनि।। सिखा पुतां दा वादा वाला है। जे लोच के सेवा
करोगे तुसाडी सेवा दरगाहि थाय पवैगी। तुसा उपर वाहिगुरु रछिआ करेगा।।

संवत 1760 मिती कतक।।

शहीद बिलास का कर्ता लिखता है :

मनी सिंघ को दे वडिआई। हुकम नामे के मध लिखाई :
सेवा करत होइ निहकामी। तिस कउ होत परापत सुआमी।
मनी सिंघ की अस करनी। इक जिहवा से जाइ न बरनी।
इन के पिता पितामा सारे। पुत्र भाई सण परिवारै।।
धरम हेत सी होऐ शहीद। गुरू बाबे के सबी मुरीद।
सेवा हरी सवारो काज। मम सेवक की राखो लाज। ।।92।।

संवत 1761 बिक्रमी को 6-7 पौष की बीच की रात को जब सतगुरू साहिबान ने आनंदपुर का किला छोड़ा तो भाई मनी सिघं जी गुरू के महलों को दिल्ली पहुंचाने में सफल हो गये।

बाद में जब मुकतसर की जंग के पश्चात गुरू जी साबो की तलवंडी पहुंचे तो भाई मनी सिंघ जी गुरू महिलों (बाल परिवार) तथा संगत सहित गुरू जी के हजूर आ हाजिर हुए। यहां पर दमदमा साहिब में ही सतगुरू साहिबान ने भाई मनी सिंघ जी से आदि बीड़ फिर लिखवाई जिस में नवम पातशाह, गुरू तेग बहादुर साहिब की वाणी भी दर्ज करवायी गई। इसी दमदमी बीढ़ को ही बाद में नादेड़ में गुरगद्दी प्रदान की गई थी।

जब सतगुरू साहिबान दक्षिण को चले गये तो भाई मनी सिंघ जी माताओं सहित दिल्ली में रहे और फिर माता सुंदर कौर जी के आदेश अनुसार श्री हरिमंदर साहिब की सेवा संभाल के लिए अमृतसर नियुक्त कर दिए गए।

श्री दशमेश जी, कार्तिक सुदी पंचम 1765 बिक्रमी (1708 ई०) को नांदेड़ (दक्षिण) में ज्योति में विलीन हो गये। इन के पश्चात् सिखी की लहर को मजबूत रखने के लिए समय की नज़ाकत को पहचानते

हुए संवत 1766 बिक्रमी (1709 ई) को बैसाखी श्री अमृतसर में मनाने के लिए दूर दूर तक पत्र लिख भेजे।

बैसाखी के समय पर अमृतसर में मीणों का मुखी और सोढ़ी निरंजन राय का जानशीन, एक महाजन चूहड़ मल था। इसके दो पुत्र थे :

1. **मुहकम सिंघ** - जिन्होंने खंडे की पाहुल प्राप्त कर ली थी।

2. **रामू मल**- जो बहुत खोटा था और अपने बाप की तरह गुरू घर का निंदक था।

सिखों के एक जत्थे का शहतूतों की छोटी सी बात को लेकर रामूमल से झगड़ा हो गया और यह झगड़ा बढ़ता-बढ़ता कुछ गंभीर शकल अख्तयार कर गया। रामू मल ने सिंघों और गुरू जी के विरूद्धशब्द-कुशब्द कहे। सिंघ गुरू की निंदा सहार न सके और सिंघों ने रामू मल को एक चांटा लगा दिया।

खालसा से मार खा कर रामू मल ने अपने पिता चूहड़ मल के पास जा शिकायत की। चूहड़ मल ने अपने अन्य हिमायतियों के संग सलाह की और कहने लगा कि मैं क्षत्रीय नहीं यदि इन सिखों को अमृतसर से बाहर न निकाल दूं।

भाई मनी सिंघ जी ने चूहड़ मल को बहुत समझाया पर वह नहीं समझा। वह जा कर नाज़िम लाहौर के द्वारा "हरिसहाय" हाकिम पट्टी की सेना चढ़ा लाया। इधर सिंघ भी तो चूड़ियां पहने नहीं बैठे थे। जांबाज शूरवीरों ने जब तलवार के जौहर दिखलाये तो हरि सहाय के साथी घबरा उठें। शहीद भाई तारा सिंघ डलवा ने हरि सहाय को पार बुलाया। यह घटना 9 बैसाख 1766 बिक्रमी (1709 ई०) की है।

चूहड़ मल इस अपमान को सहार न सका और दाद फर्याद लेकर लाहौर के नाज़िम असलम खान कोजा मिला। उसने एक **चौधरी देवे** को लोगों को और कुछ अपनी सेना दे कर चूहड़ मल की सहायता के लिए अमृतसर भेज दिया। लड़ाई की कमान खुद भाई मनी सिंघ जी संभाल रहे थे। सिखों ने लोगों की भीड़ तथा नाज़म की सेना को भगा दिया। यह घटना 15 बैसाख 1766 ई० बिक्रमी की है।★ इस समय भाई मनी सिंघ की आयु 65 वर्ष की थी। भाई मनी सिंघ की यह विजय पंजाब में मुगल राज्य की अधोगति के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव समझनी चाहिए। शहीद बिलास के कर्ता "सेवा सिंघ भट्ट" ने इस युद्ध का चित्रण इस प्रकार किया है :

वजे ढोल नगारे धगां घूरीआं।
धूह लइयां सरवाहीआं, मासां खाणीआं।।
तीरी छहिबर लाई, तक तक जोधिआं।।

---

* कई लेखक यह घटना 1726 ई० की मानते है।

पाऊं वधावण अगे, धावण साम्हणे।
शीहा वागूं बुकण, भरे थी रोह में।
देवे कूं सिंघ घेरण, घेरा घत के।
भाग गया रण छोर मोहरी तुरग कूक।
मनी सिंघ ललकारे फड़ लो जाय ना।
ढ़ाई पहर आ होया संहार जम के।
तीन कोस का पीछा कीआ खालसें।
सेवा हरि बलिहार राखी पैज गुर।
तेरी शरन तकाई बाजा वालिया।।128।।

यह वर्णन तब का है जब बाबा बंदा सिंघ बहादुर की जत्थेदारी में खालसा ने सरहिंद विजयी किया था और छोटे साहिबजादों के कातिल वज़ीर खान को अपने किये की सजाय मौत दी थी।

सन् 1710 ई० में जब बाबा बंदा सिंघ जी लोहगढ़ के किले में से निकल जाने में सफल हो गये तो बादशाही सेनाओं ने किला फतेह कर लिया। हकूमत ने खालसा अंदोलन को दबाने के लिए पूरा ज़ोर लगाया। इसका असर गुरू की नगरी अमृतसर पर भी हुआ। मुसद्दी (कारकुन) सब भाई मनी सिंघ जी का साथ छोड़ गये। पर यह निर्भय, निर्माण और निश्काम सेवक, "सेवक कऊ सेवा बनि आई"के शुभ भाव को समझते हुए, गुर दरबार की सेवा पर डटा रहा।

संवत 1771-72 बिक्रमी (1714-15 ई०) में लहिंदे की सिख संगत के प्रेम को सामने रख कर भाई मनी सिंघ जी, जिला झंग के गांव बागां वाले पहुंचे और यहां के गुरद्वारा नानक सर में भाई भगत सिंघ सिक्का आदि श्रद्धालुओं के कहने पर कुछ समय ठहर कर छटे सतगुरू साहिबान की कथा सुनायी और फिर वापिस अमृतसर आ गये।

उधर गुरदास नंगल की गढ़ी में से बाबा बंदा सिंघ बहादुर घेर कर पकड़ लिये गये और सिंघों सहितपकड़ कर दिल्ली शहर ला कर उन्हें शहीद कर दिया गया। बाबा बंदा सिंघ की शहीदी के पश्चात् खालसा दो हिस्सों में बंट गया।

1. बंदई खालसा। 2. तत् खालसा।

बाबा बंदा सिंघ जी की शहीदी के पश्चात श्रद्धावश कई सिंघों ने बाबा बंदा सिंघ को गुरू मानना शुरू कर दिया था। वह अपने आप को बंदई खालसा कहलवाते थे। बंदइयों का आगू अमर सिंघ महंतखेमकरनीया था। इस ने अपना अलग ही पंथ चला लिया था। यह सेवकों से माथा टिकवाता और संगत में गद्दी लगा कर बैठता था। यह बंदइयों को नीले रंग के कपड़े डालने से मना करता और लाल वस्त्र डालने का आदेश देता था। इसने मास, मछली और प्याज खाना, सब के लिए बंद करवा दिया

था। यह महंत सिखों को कहता कि दसवें गुरू जी, बाबा बंदा सिंघ को ग्याहरवां गुरू नियुकत कर गये हैं। बंदई एक दूसरे को मिलते समय 'फतेह दर्शन' का अभिवादन करते थे।

पर दूसरी ओर तत् खालसा था जो केवल गुरू ग्रंथ साहिब को ही गुरू मानता था। तत् खालसे की ओर से बाबा बिनोद सिंघ के सपुत्र बाबा काहन सिंघ ने दीवाली का सम्मिलन करने के लिए हकूमत से आज्ञा पहले ही ले ली थी। दोनों पक्ष अमृतसर पहुंचे और दोनों ही अपने आपको अधिकृत वारिस तथा प्रबंधक सिद्ध करने के लिए लड़ने को तैयार हो गये। जुड़ी हुई संगत ने दोनों पक्षों को दीवाली पर झगड़ा न करने की बात मनवा ली क्योंकि काफी समय पश्चात् सिंघ मिल बैठे थे। हकूमत की भी यह नीति लगती थी कि ये आपस में लड़ते झगड़ते समाप्त हो जाएगे इसी लिए इक्ट्ठे करने की भी आज्ञा दे दी गई थी। दीवाली तो आराम से गुज़र गई पर जज्बे भड़के हुए थे। किसी स्थायी हल की जरुरत थी।

दीवाली के पश्चात् सिखों ने माता सुंदर कौर जी को सारे खतरों से अवगत करवाया। माता जी ने दूर दृष्टि से काम लिया और भाई मनी सिंघ जी को यह मसला सुलझाने का काम सौंप दिया। भाई मनी सिंघ जी ने देख लिया था कि यदि इस फूट का उचित प्रबंध न किया गया तो लावा फूट कर पंथ के खड़े महल को भी उखाड़ देगा। अकाल बुंगे पर तत् खालसा के जत्थेदार बाबा काहन सिंघ तथा झंड़ा बुंगा पर भाई अमर सिंघ महंत खेम करनियां वाले ने कब्जा कर लिया था। सिखों में रोश उस समय बहुत बढ़ गया जब अमर सिंघ महंत रथों पर गदेले लगा कर दरबार साहिब तक आ गया। बैसाखी वाले दिन भाई मनी सिंघ ने तज़वीज पेश की कि नित्य प्रति का झगड़ा मिटाने के लिए"प्रबंध" किस के हाथ होना चाहिए और वारिस कौन है का फैसला करने के लिए हरि की पौड़ी में पर्चियां डाली जाए। अत: दोनों पक्ष मान गये।

भाई मनी सिंघ ने एक चिट पर बंदई खालसा का जंगी नारा "फतेह दर्शन" और दूसरे पर"वाहिगुरू जी की फतेह" लिख कर हरि की पौड़ी अमृत सरोवर में फेंक दी। फैसला हो गया था कि जिस की पर्ची पहले तैर आवेगी वही गुरुद्वारों की संभाल का नेता मान लिया जायेगा। करनी कुदरत की "वाहिगुरू जी की फतेह" वाली पर्ची ऊपर आ कर तैरने लगी। पंथ ने जैकारे छोड़े और इस प्रकार भाई मनी सिंघ जी के बीच में पड़ जाने के कारण बुद्धिमता से यह झगड़ा शांतिपूर्ण निपट गया और भाइयों के हाथों भाइयों का खून होना एक बार तो बच गया।

फैसला हो गया था। इसलिए बहुत से लोगों ने तत् खालसा में अभेद होने का ऐलान कर दिया पर अमर सिंघ महंत ने लाहौरा सिंघ के द्वारा यह फैसला खालसा जी को सुनाया कि वह किसी शकल में भी यह फैसला नहीं मानता। उसने शक्ति को अज़माने की बात भी की। इस पर यह विचार बना कि बाबा काहन सिंघ का पुत्र मेहरी सिंघ (मीरी सिंघ) तथा लाहौरा सिंघ का पुत्र संगत सिंघ झंडे बुंगे के पास कुश्ती लड़े, जो जीत जायेगा वही प्रबंधक तथा वारिस होगा। कुश्ती लड़ी गई। एक ही हाथ में मेहरी सिंघ ने संगत सिंघ को हरा दिया। लाहौरा सिंघ ने तो हाथ जोड़ कर क्षमा मांग ली और खालसे के संग कंधा मिलाकर लड़ मरने का प्रण किया पर अमर सिंघ महंत फिर भी डटा रहा। अब खालसा जी से न रहा गया। उन्होंने बंदईयों को मार-मार कर दरबार साहिब से बाहर धकेल दिया। इसी लड़ाई झगड़े में महंत अमर सिंघ मारा गया और तत् खालसे का दरबार साहिब पर कब्जा हो गया।

भाई मनी सिंघ जी की योग्य अगवाई ने विपत्ति के समय पर सिखों में एकता करवा दी। सिखों को जत्थेबंदी मजबूत करने के अवसर मिल गए। सिखों का यह सम्मिलन चौधरियों, फौजदारों को एक आंख नहीं भाता था। दीवाली तथा वैसाखी के सम्मिलन में वे अपनी मौत छिपी देखते थे। भाई मनी सिंघ जी अमृत प्रचार करके सिखों की संख्या बढ़ा रहे थे। यह भाई मनी सिंघ जी का प्रचार ही था जिस ने कौम को कमज़ोर नहीं होने दिया।

अब भाई मनी सिंघ जी की आयु 90 वर्ष की हो चुकी थी। उन्होंने अन्य मुखी सिंघों से मिल कर सलाह की कि आती दीवाली के समय दीपमाला का मेला श्री अमृतसर में लगाया जाये ताकि दूर दूर से सिख संगत आय और आपस में मिल कर पंथ के हालत से अवगत हो सके और पंथ को चढ़दी कला में ले जाने के लिए यह सम्मिलन सहायक हो सके।

लाहौर में रहने वाले सरदार सुबेग सिंघ, सरदार सूरत सिंघ आदि गुरसिखों के साथ मिल कर भाई मनी सिंघ जी ने लाहौर के सूबा ज़करिया खान के साथ मेला लगाने के बारे में बातचीत की। सूबे को लाहौरी सिखों ने विश्वास दिलवाया कि मेले के समय किसी प्रकार का झगड़ा नहीं होगा। इस बात के वे साक्षी बने। जकरिया खान ने 10 हजार (टके) रुपये मेले का टैकस मांगा जो मेले के पश्चात् भाई मनी सिंघ ने देना स्वीकार कर लिया। मेला 10 दिन तक लगाने की इज़ाजत मिली।

दूर दराज के सिंघों को अमृतसर में एकत्र होने के लिए भाई मनी सिंघ जी ने संदेश भेजे। उधर लाहौर में सिख पंथ के द्रोही हरिभगत निरंजनियां, छीने का कर्मा तथा अन्य मुखबरों ने सूबे के कान भरे कि सिंघों को एक बार में ही समाप्त करने का इस से अच्छा अवसर और नहीं मिलना था। लाहौर के सूबे को यह बात जंच गई। वह सिखों के सम्मिलन को जाल में आया एक शिकार समझता था। उसकी योजना यह थी कि मिल बैठे खालसा को दीवाली वाली रात को घेर कर तोपों से उड़वा दिया जाय। जकरिया खान की यह चाल थी कि दीवान लखपत राय को भारी सेना देकर राम तीर्थ भेजा जाय और दीवाली की रात को हमला बोल कर सिखों का कत्लेआम किया जाये।

उधर सूबा यह साज़िश रच रहा था। इधर सिंघ भी अबोध बाल नहीं थे। इस साजिश का समाचार लाहौरी सिंघों ने भेदिया द्वारा भाई मनी सिंघ जी तक पहुंचा दिया। भाई मनी सिंघ जी ने उसी समय दूर दूर के सिंघों को संदेश तथा पत्र द्वारा दीवाली के मेले पर अमृतसर में आने से रोक दिया और बता भी दिया कि सूबा की नीयत ठीक नहीं है।

दीवाली का समय आ गया। जिन सिंघों को भाई मनी सिंघ जी की चिट्ठियां और संदेश नहीं मिले थे वे दर्शनों के लिए आ पहुंचे। चाल के अनुसार लखपत राय ने आक्रमण कर दिया। दीवान लग नहीं सका। कई स्नान करके निकलते ही परिक्रमा में शहीद कर दिये गये। भाई मनी सिंघ जी ने रोश मनाया और हकूमत के कर्मचारियों के पास साज़िश तथा कत्लेआम का विरोध कर भेजा पर उल्टे ज़करिया खान ने 10,000 (टके) रुपये की मांग कर भेजी।

भाई मनी सिंघ जी ने कहा कि इकट्ठ तो हो नहीं सका, रुपये किस बात के ? भाई मनी सिंघ जी को बाकी सिंघों सहित गिरफतार करके लाहौर लाया गया। चंडाल चौकड़ी मुखबरियों ने काजी को साथ

लेकर सूबे को भड़काया कि सिंघों के सरदार भाई मनी सिंघ को तू अपनी बगल के सांप की तरह पाल रहा है। तेरा भला इसी में है, यदि इस को मुसलमान बनाया जाय या फिर इसे समाप्त कर दिया जाय। ज़करिया खान के सामने भाई मनी सिंघ जी को सिंघों सहित पेश किया गया। प्राचीन पंथ प्रकाश के कर्ता, भाई रतन सिंघ भंगू के कथनानुसार :

खान कहयो होहु मुसलमान। तब छोड़ेंगे तुमरी जान।
सिंघन कहयो हम सिदक न हारैं। कई जनम पर सिदक सु गारैं।
तब काजी ने जिम ही कहयो। तिवै मुफती ने फतवा दयो। ।41। ।
बंद बंद जुदे सिंघ मनी करावों। इम कर चहीयत जगत दिखावो। ।42। ।

जब भाई मनी सिंघ तथा साथ के और सिंघों को लाहौर के नखास चौक में लाया गया ताकि सभी लोग सिंघों को सजा पाते देख सकें। भाई मनी सिंघ को बंद बंद काट कर शहीद कर दिया गया। शहीद बिलास के कर्ता भाई सेवा सिंघ "भट" के कथन अनुसार :

हाढ़ सुदी पंचम थित आही। सत्रह से इकानवै* माही। ।
जाय निखास चौक के बीच। सूबे खान बहादर नीच। ।
पहलों मनी सिंघ के ताई। काजी फतवा दीयो सुणाई।
तेसे गल जलादै आय। बंद बंद दीये जुदा कराय।
पीछे सिंघ गुलजारे केरी। पुट्ठी खल लाही बिन देरी।
भूषत सिंघ की आंख कढाय। फेर चरखड़ी दीयो चढ़ाय।
जहां भयो इह साका भारी। खलकत देखण आयी सारी।
सेवा हरी जितक सिंघ और। करै शहीद दुष्ट तिह ठोर। ।203। ।

(शहीद बिलास पृ० 92)

शहीद बिलास के कर्ता के अनुसार भाई मनी सिंघ जी की शहीदी आषाढ़ सुदी पंचम संवत 1791बि(14 जून 1734 ई०) को हुई बतायी जाती है। इस की हां में हां मौकें का गवाह भाई कुइर सिंघ कर्ता गुर बिलास पातशाही 10वीं मिलाता है जो शहीदी के समय पर नखास चौक में हाजर था '

संमत सत्रह सहिस इकावन। मास अखार शुक्ल बर पावन।
दहे बीच तुर्कन को मेला। तब ही मिरत गुरू संग चेला। 192।
पंचम थित भमन अतिबारी। लवपुर में सी देह बिनसारी। 193।

(गुरबिलास पातशाही 10 पत्रा 219)

---

* कई इतिहासकारों ने संमत 1795 बिक्रमी लिखा है।

इस की पुष्टि नीचे लिखे उदाहरणों से होती है :

(क) मनी सिंघ भाई दास का, पोता बलू का, पड़पोता मूले का- - - - - -शाही हुकम गैल असाढ़ सुदी पंचमी संबत १७९१ को लाहौर के महलान ६ घड़ी दिन चढ़े बंद बंद काटा। भूं काट आया।, गैलों जगत सिंघ बेटा भाई दास का, चित्र सिंघ बेटा मनी सिंघ का, गुरबख्शा सिंघ बेटा मनी सिंघ का मारे गये। आगे गुरू भाने का खाविंद गुरू गुरू जपणा जनम सवरेगा।

(भट वही मुलतानी सिंधी)

(ख) रदुत जलहाना बीर मनी सिंघ चऊ कुंटी जस तउ का परिआ।
गुरू राम दास का होय सेवक, सिंघ नाम तउ उजल करिआ।
सिखी में सूरा, भगती में पूरा, ज्ञान खढ़ग ले सामें लरिआ।
फते वाहिगुरू मुख थीं निकसी, बंद बंद कट पोश उखरिआ।
दयाल दास सम कीआ तउ साका, बिरख बंस जले का हरिआ।
सात सपूत त्रने रने, ऐक ऐक लर सामे : मरिआ।
जै जै कार भयो जग तउ का धर्म हेत दुख देह ते जरिआ।
राना रंक सम कोई नहि तउ के, दान देह मूंड भटों का भरिआ।
सत्रा से इकावन भयो साका, असाढ़ बानमें उस उचरिआ।
भीम सिंघ जस जोड़ के भनिआ, भडडू के मलहान थाल महैरे का
भागू सिंघ लिआ आगै धरिआ।
बेल बधै तउ बीर संगराम सिंघ की, भट गावै दर तउ ते खरिआ।।

(भट वही मुलतानी, सिंधी)

भाई मनी सिंघ जी शहीद का संस्कार भाई सुबेग सिंघ आदि लाहौरी सिखों ने मस्ती दरवाजे से बाहर शाही किले के समीप ले जा कर किया। जहां पर गुरद्वारा शहीद गंज (द्वितीय) बना है।

भाई साहिब की शहादत ने हर सिख में गुस्से तथा जोश की लहर भर दी। इतिहास गवाह है कि सिख कौम जहां अंत की दयालू कौम है वहीं हैंकड़बाज जालिम को क्षमा भी नहीं करती है। जितनी भी शहीदियां हुई उन का बदला लिए बिना खालसा टला नहीं। इसलिए भाई मनी सिंघ जी की शहीदी के पश्चात् यह जरुरी था कि जिन हत्यारों का, भाई मनी सिंघ जी की शहीदी में हाथ था, उन को पार बुलाया जाय। बंद बंद काटने की सजा अब्दुल रजाक की निगरानी में भुगताई गई थी। साथ ही वह भाई साहिब

की गिरफतारी के समय लखपत के साथ था। सिंघों ने बाद में समय पा कर, काजी के पैतृक गांव अलीगढ़ (जिला गुजरांवाला) को उजाड़ कर उसका नाम अकालगढ़ रखा और भाई मनी सिंघ जी के भतीजे सरदार अघड़ सिंघ ने दिन दिहाड़े काजी को कत्ल कर दिया।

जिस काजी ने फतवा दिया था, उसको थराज सिंघ (भाई मनी सिंघ के भतीजे) ने उसके घर (मुजंग लाहौर) में जाकर कत्ल कर दिया। पर अभी भी दो बड़े हत्यारे समद खान और खान बहादुर जकरिया बाकी थे। यह अब्दुल समद खान, प्रसिद्ध समद खान यूसफ जई के नाम से मशहूर था। इस ने भाई साहिब को काफी कष्ट दिये थे।

समद खान, गांव माणक के पास डेरा लगाये बैठा था। सिख पंथ के महानन जत्थेदार नवाब कपूर सिंघ के एक जत्थे की समद खान के साथ मुठभेड़ हो गयी है और समद खान पकड़ा गया। उसको रस्सों से जकड़ कर घोड़े के संग बाध दिया गया और घोड़ों को खूब दौड़ाया गया। इस तरह घोड़ों के पीछे घसीट कर मसमद खान दोजक की आग में जलने के लिए आगे भेज दिया गया।

समद खान की मृत्यु को देखकर दूसरे अपराधी, जकरिया खान को समझ आ चुकी थी कि खालसा ने एक् दिन उसका भी यही हाल करना है। क्योंकि भाई साहिब के कातिल काजी तथा मुफती को मार कर सिखों का सारा गुस्सा ठंड़ा नहीं हुआ था। सारी कलेश की जढ़ तो खान बहादुर जकरिया ही थी। अत: इस को कत्ल करने के लिए सिंघ तत्पर थे, पर खान बहादुर इतना डरा हुआ था कि उसने किले में से बाहर निकलना ही बंद कर दिया था। सिंघों ने योजना बनाई एक दिन दो हजार सिंघ तुर्की भेस धारण करके, हरा झंड़ा ले कर टकसाली दरवाजे से शहर में आ घुसे। उन की यह योजना थी कि जब खान बहादुर जुम्मे की नमाज पढ़ने को शाही मसीत में जायेगा तो उसे हल्ला बोल कर कत्ल क्र दिया जाय पर किसीं तरह ज़करिया खान को सूचना मिल गयी और वह नमाज पढ़ने के लिए किले से बाहर नहीं आया। अत: सिंघों के दिल की इच्छा पूरी न हुई। अंतृ में यह पापी ज़करिया खान सन् 1745 ई० को शहीद भाई तारू सिंघ की जूती सिर पर मरवा कर अपने कर्मों का फल भोग कर मर गया।

व्यक्तितत्व

भाई मनी सिंघ जी शहीद का समूचा जीवन एक अद्वितीय तथा अमोलक विरासत है। इन क जीवन चरित्र को पढ़ने से, इनके बहु पक्षीय व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं। भाई साहिब की केवल अपनी ही कुर्बानी नहीं, इन का तकरीबन सारा ही परिवार इनके अपने जीवन में ही गुरू के नाम लग गया था। इन के बाकी भाइयों, पुत्रों, तथा पोतों की शहीदी पर जरा सरसरी नज़र मारी जाय तो उस समय के इतिहास में से इन के साथ की मिसाल कम मिलेगी। पिता-पितामा से गुरू घर का भाई साहिब का खानदान सिदकी तथा श्रद्धालू चला आता था।

साहित्य सेवा :

भाई मनी सिंघ की साहित्य सेवा संवत 1735 बिक्रमी (1679 ई) से आरंभ होती है जब इन की आयु केवल 35 वर्ष की ही थी। पुराने अभिलेखों के अनुसार भाई साहिब की अपनी और अपने द्वारा करवाई गई साहित्य सेवा को हम इस प्रकार बांट सकते हैं :

(क) पोथियों की लिखाई (ख) दमदमी वीढ़ का संपादन (ग) साखियों की रचना (घ) दसम ग्रंथ का संपादन (ङ) फुटकर रचना।

ज्ञानी गर्जा सिंघ की खोज के अनुसार भाई मनी सिंघ की दो रचनायें **ज्ञान रत्नावली और भगत रत्नावली** मानी जाती है। कुछ एक टीका भी उनके नाम से संबधित है। इन रचनाओं को देखने से, पता चलता है कि भाई साहिब स्वयं तो कथा वाचक थे और आगे सुन कर लिखने वाला उनका कोई और श्रद्धालू था।

भाई मनी सिंघ के नाम पर किसी ने श्री गुरू शबद सिद्धि अर्थात् श्रद्धा पूर्ण तथा जपुजी साहिब का टीका लिख कर अपनी रचना को हरमन प्यारा बनाने की कोशिश की है। इन पुस्तकों में मंत्रों, जंत्रों तथा टोनों में विश्वास रखने पर बल दिया गया है। जो कभी भी भाई मनी सिंघ जी नहीं लिख या कह सकते। गुर सिखी में नाम रूपी मंत्र का जाप तो बहुत ऊंची व दुर्लभ वस्तु है पर जब मंत्रों की तरह नाम को सांसारिक इच्छाओं के पुर्ति के लिए प्रयोग किया जाय तो गुरसिखी में इस को बहुत नीच कम समझा जाता है।

महान योद्धा, योग्य प्रबंधक तथा सफल नेता : भाई साहिब में पंथ को एकता की कड़ी में पिरोये रखने के लिए अगम्य लगन तथा उत्साह था। श्री दरबार साहिब के प्रबंध को जिस उत्तम ढंग से एक संभाल कर मर्यादा का सुधार किया, वह आपको एक योग्य प्रबंधक सिद्ध करने के लिए काफी है। जहां आप गुरबाणी के अच्छे व्याख्याकार थे, वहीं निर्भय योद्धा तथा शस्त्र कला मे भी प्रवीण थे। श्री दशमेश जी के समय तथा उन के पश्चात् इस विद्वान योद्धा ने जंगों युद्धों में निर्भय हो कर भाग लिया। पंथ की फूट को मिटा कर जिस योग्य ढंग से बंदई तथा तत् ख़ालसे को एकत्र किया गया वह आप जी की बुद्धिमता तथा योग्यता की मुंह बोलती तस्वीर है।

अंत में प्राचीन पंथ प्रकाश के कर्ता भाई रतन सिंघ भंगू का नीचे लिखा कबित्त, जो भाई मनी सिंघ जी के व्यक्तित्व के हर पक्ष को उजागर करता है, दे कर इस ट्रैक्ट को समाप्त करते हैं :

सिखन में सिख ऊचों, भगतन में भगत सूचो,
सिखी की निआई कहीऐ भाई मनी सिंघ जी।
जगत मैं जैकार भयों, धर्म अर्थ दह दयो,
सिदक सों कटायो हीयो, न मानी कछु शंक जी।
सिख सो प्रसन्न भए, दुष्ट सभ भृष्ट भऐ,
ज्ञान की खड़ग से, सो मारे चौरंग जी।
गुर सिख कहावै जोऊ, करनी जिह कमावै सोऊ।।
मनी सिंघतुल भयो राणा ओ नहि रंक जी।

(रतन सिंघ भंगू, प्राचीन पंथ प्रकाश, संस्करण 3 पृ० 227)**

੧ੴ वाहिगुरू जी की फतहि।।

सिख मिशनरी कालेज का उद्देश्य

हम सिख हैं।

इसलिए यह आवश्यक है कि हमें सिखी असूलों(नियमों) का पता हो, गुरबाणी के अर्थ भाव, सिख इतिहास की जानकारी, सिख रहित मर्यादा के असूल सिख फिलासफी, सिख सभ्यता की हर गुरसिख को जानकारी होनी अति आवश्यक है। यदि हमें इनका ज्ञान नहीं हो हम कैसे सिख कहला सकते हैं ? पाठ हम करते जा रहे हैं, पर यदि कोई हमसे गुरबाणी के किसी वाक्य का अर्थ पूछ ले और हम जवाब न दे सकें तो यह हमारे लिए कितनी शर्मनाक बात होगी। दस गुरू साहिबों एवं प्राचीन गुरसिखों के इतिहास की जानकारी होनी आवश्यक है, यदि हम अपना बेमिसाल इतिहास नहीं जानते तो हम कैसे दूसरे को बता सकेंगे कि हम कौन-सी विरासत के मालिक हैं। सिख रहत् मर्यादा के उसूल कौन-कौन से हैं, इस विषय पर हम आमतौर पर अज्ञानी हैं। घर में पाठ रखना हो या जीवन में कोई संस्कार करना हो, गुरमत क्या है, इसे जानने के लिए हमें ग्रंथी सिंघों या ज्ञानी व्यक्ति पर निर्भर होना पड़ता है। पर क्या सिख होते हुए ऐसे असूलों की जानकारी हमें स्वयं को होनी ज़रूरी नहीं ?

आज हम देखते हैं हमारे में जो कमज़ोरियां आ रही हें, उसका मुख्य कारण यही है कि हमने सिखी के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की ज़िमेवारी नहीं समझी। यदि हमें गुरसिखी के असूलों का स्वयं ज्ञान हो तो हम अपने नौजवानों को जो अनजाने में दाड़ी व केशों की बेअदवी कर रहे हैं, नशे पी रहे हैं, देहधारी पाखंडी गुरूओं को मान रहे हैं, को गुरबाणी के उसूल दृढ़ करवा कर, खून से लिखा अपना बलिदानी इतिहास सुना कर सिख धर्म की ओर प्रेरित कर सकते हैं। जो नौजवान आज बागी हो रहे हैं तो इसमें उन बेचारों का क्या दोष ? दोष तो हमारा अपना है, हमारे प्रचारकों का है, हमारी अगवाई करने वालों का है जो ऐसे नौजवानों को सिख धर्म की ओर नहीं प्रेरित कर सकें।

आज ना तो सिखी हमें माता-पिता से, घर से ही मिल रही है (क्योंकि माता-पिता ही सिखी से दूर हो चुके हैं तथा मादा प्रस्ती में बुरी तरह उलझे हुए हैं) व ना ही सिखी 'खालसा' स्कूलों, कालेजों से ही मिल रही है, क्योंकि किसी स्कूल या कालेज को छोड़कर सिखी के संदेश देने का प्रबंध हम इनमें कर ही नहीं सके या किया ही

नहीं, जहां पहले खालसा, स्कूलों कालेजों में होता था। गुरद्वारों में से सिखी की सिक्षा मिलनी चाहिए थी क्योंकि गुरुद्वारे बने ही सिखी का प्रचार करने के लिए, पर आज गुरुद्वारों में फैली गुटबाजी, पार्टीबाजी गुरुद्वारे पर कब्ज़े की भूख, गोलक (गुरूद्वारे में चढ़ाए हुए धन) की लड़ाई, नौजवानों के मार्ग में बाधा बनी हुई हैं, जिस कारण वह गुरूद्वारों में हो रहे धर्म प्रचार को नहीं स्वीकारते। फिर जो प्रचारक हमने अपने धर्म स्थानों में लगा रखे हैं, उनमें से बहु-गिनती अनपढ़ हैं। यदि हमारे बहुत सारे प्रचारकों की, ना स्कूली शिक्षा हो, ना वह धर्म के क्षेत्र में पूरा ज्ञान रखते हों, ना हि उच्च महान् जीवन, ना ही प्रचार के लिए मिशनरी उत्साह हो तो फिर यह आशा कैसे रखी जा सकती है कि ऐसे प्रचारक नौजवान पीढ़ी पर अपने प्रचार का अच्छा प्रभाव डाल सकें.। सत्य तो यह है कि प्रचारकों का यह क्षेत्र केवल एकमात्र माया कमाने का एक साधन बना कर रख दिया गया है, व प्रचार का वास्तविक उद्देश्य अलोप होता जा रहा है।

जब हम दूसरे धर्मों ईसाई मत, इस्लाम मत आदि की ओर देखते हैं तो उनके प्रचारक व प्रचारक तैयार करने वाली संस्थाएं (अदारे) देख कर दंग रह जाते हैं कि कैसे उन्होंने ग्यारह सालों का लम्बा समय लगाकर लाखों कि गिनती में प्रचारक तैयार किए हैं व प्रचार के क्षेत्र में उन्हें पूरी तरह तैयार किया है। पर जब हम अपने प्रचारकों की ओर देखते हैं तो असहाय से होकर रह जाते हैं क्योंकि हमारे प्रवंधकों ने प्रचारकों की तैयारी के लिए कोई बड़े संगठित व योग्य मिशनरी कालेज नहीं खोला, जहां प्रचारकों को सिख धर्म की पूरी शिक्षा देकर तैयार करके प्रचार के क्षेत्र में भेजा जा सके। योग्य प्रचारकों की कमी कारण ही हमारा धर्म जो दुनिया का सबसे बढ़िया व आलमगीर धर्म है। जो हर देश, प्रदेश में, बिना किसी जात-पात, अमीर-गरीब, वर्ग भेद, रंग रूप आदि बिना भेदभाव प्रचार किया जा सकता है, संसार में तो क्या पंजाब में भी सही ढंग से नहीं प्रचार सका

उपरोक्त कमी को महसूस करते हुए 'सिख मिशनरी कालेज' आरम्भ किया गया है, जिस द्वारा 'दो साला सिख मिशनरी कोर्स (Correspondonce Course) करवाने का प्रबंध किया गया है। पढ़े-लिखे नौजवान, इस दो साला सिख मीशनरी कोर्स करने के बाद (Elementry Sikh Missionaries)के तौर पर कार्य करेगें। यह गुरमति प्रचारक अपनी कार्य करते हुए प्रचार का काम (Part time) में बिना किसी प्रकार की तन्खाह फल आदि के करेंगे।

सदा याद रखें

1. सिख ने केवल एक अकाल पुरख के नाम का ही सिमरन करना है जो सब को पैदा करने वाला, पालने वाला और मारने की ताकत रखता है।

2. गुरू ग्रंथ साहिब के बिना और किसी देहधारी को गुरू नहीं मानना और न ही किसी के आगे माथा टेकना है।

3. सिख ने सुबह जल्दी उठ कर स्नान करके, वाहिगुरू का सिमरन करना है और फिर गुरबाणी का पाठ (नितनेम) करना है।

4. गुरबाणी का पाठ करते समय जल्दी नहीं करनी चाहिए। प्यार, आदर से मन लगा कर, समझ विचार कर, शुद्ध पाठ करना चाहिए।

5. गुरसिख ने प्रतिदिन गुरूद्वारे जा कर कीर्तन, कथा सुन कर लाभ उठाना है। सिख के लिए धार्मिक स्थान केवल गुरूद्वारा ही है, और कोई नहीं।

6. सिख ने एक दूसरे को मिलते समय वाहिगुरूजी का खालसा, वाहिगुरूजी की फतहि ही कहना है।

7. गुरबाणी की पोथी, गुटके आदि को रूमाल में लपेट कर आदर से रखना है और गन्दे हाथ नहीं लगाने।

8. सिख ने हमेशा अपना नाम सिंघ या कौर शब्द के साथ पूरा लिखना है। नाम के साथ जात नहीं लिखनी चाहिए।

9. सिख धर्म में प्रभु के नाम सिमरन को ही सच्चा तीर्थ माना गया है। और तीर्थ यात्रा और तीर्थ स्थानों का सिख धर्म में कोई स्थान नहीं है।

10. सिख ने ऐतिहासिक गुरूद्वारों के दर्शनों के लिए जाना है ताकि सिख इतिहास की जानकारी हो सके और अपने बहुमुल्लय विरसे के बारे में जान सकें।

11. सिख ने कुश्तीयां तथा और खेलों में बढ़ चढ़ कर हिस्ता लेना है, परन्तु गंदी फिल्में और गंदे नाटक, जिनमें गंदे सीन दिखाये जाते हैं, से दूर रहना है।

12. सिख ने कभी भी, किसी प्रकार का नशा (शराब, भंग, अफीम, चरस, तंबाकू, सिगरट, स्मैक)आदि का प्रयोग नहीं करना।

13. सिख लड़कियों के लिए नाक, कान छेदना और नाक, कान में गहने पहनने सिख रहत मर्यादा के अनुसार गलत है। सिख स्त्रियों के लिए घुंघट निकालना मना है।

14. सिख स्त्रियों के लिए घुंघट निकालना मना है।

15. सिख पुरुष और स्त्रीयों के लिए सिर ढ्के बिना बाजारों में घूमना और नंगे सिर रहना विवर्जित है। केशों के आदर के लिए हर समय दसतार या चुंनी से केश ढ्कने चाहिए।

www.sikhbookclub.com

16. सिख स्त्रियों ने किसी प्रकार का व्रत नहीं रखना। करवा चौथ, पूर्णमाशी, मस्या आदि के व्रत रखने निरोल मनमत है।

17. सिख ने कभी शराध नहीं करने और न ही शराधों में हिस्सा लेना है।

18. सिख के लिए सारे दिन ही अच्छे हैं। बुरे अच्छे दिनों का विचार नहीं करना। संगराद, मस्या, पूर्णमाशी आदि दिन कोई खास पवित्र नहीं बल्कि शेष दिनों जैसे हैं।

19. गुरसिख ने कभी भी किसी पंडित या ज्योतिषी के ऊपर विश्वास नहीं करना और न ही राशिफल के चक्र में पड़ना है। जन्म समय जन्म कुंडली नहीं बनवानी और शादी के समय साहा नहीं निकलवाना।

20. सिख ने किसी मूर्ति की पूजा नहीं करनी। फोटो या मूर्ति को हार डालने, धूप देना सिख रहित मर्यादा के अनुसार विवर्जित है।

21. श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी के पीड़े को मुठठी चापी करनी, दीवारों पर नाक रगड़ना और मंजी साहिब के नीचे जल रखना मनमत है।

22. किसी मनुष्य का सतिगुरू जी के प्रकाश समय संगत में गदेला लगा कर बैठना मनमत है।

23. कीर्तन करते समय गुरबाणी से बाहर की मनोकल्पित और फालतू पंकित लगा कर धारना, लगानी मनमत है।

24. संगत में एक समय एक ही बात होनी चाहिए। पाठ अथवा कीर्तन, कथा अथवा वखियान। अखंड पाठ अथवा सहज पाठ के साथ साथ वही जगह पर कीर्तन, कथा लैकचर के प्रोग्राम करने मनमत है।

25. अखंड पाठ अथवा सहज पाठ स्वयं करने चाहिए। अगर स्वयं न कर सके तो किसी बुद्धिमान पाठी से अवश्य सुनना चाहिए। ऐसा न हो कि अकेला पाठी बैठा पाठ करता रहे और हम दूसरे कामों में लगें रहे।

26. कड़ाह प्रसाद और लंगर खाते समय हमें जल्दी नहीं करनी चाहिए।

27. संगत में कड़ाह प्रसादि बांटने से पहले पांच प्यारों का गफा अलग निकाल कर बांटना चाहिए, फिर ताबिया बैठे सिख को कटोरी में डाल कर देना चाहिए, ताकि वह सेवा से मुक्त हो कर खा सके। फिर संगत में बांटना चाहिये।

28. अरदास होते समय सभी स्त्री पुरुषों को हाथ जोड़ कर खड़े होना चाहिए।

29. श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी की बाणी के हुकम को मान लेना ही गुरू ग्रंथ साहिब का पूर्ण सतिकार है।

30. सिख के लिए हुकम है कि सभी काम की आरम्भता से पहले वाहिगुरू आगे अरदास करे।